भगत रविदास – सबद ६
कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥
रागु गउड़ी पूरबी, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ३४६

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥
ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥१॥
सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१॥ रहाउ ॥
मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥
करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥
जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥
प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥३॥१॥

सारः एक सीमित सोच अपना एक छोटा-सा संसार रच लेती है। जिस माहौल को हम बार-बार देखते हैं, वही हमारी सोच की सीमाएँ तय करता है कि क्या संभव है, जिसे हम फिर सच्चाई मान लेते हैं। दिनचर्या की ज़िंदगी का आराम हमारे नज़रिए को संकरा कर सकता है, यहाँ तक कि हमारी असंतुष्टि को भी प्रभावित कर सकता है और तृप्ति की हमारी इच्छा को भी सुस्त कर सकता है। हम परिचित को सत्य, सामान्यता को सम्पूर्णता और आसक्ति को भक्ति समझ बैठते हैं। परिचित से जुड़े रहने की यह प्रवृत्ति बुद्धि की कमी नहीं बल्कि जागरूकता का अभाव है।जिस पल हमें एहसास होता है कि हमारे विचार सिर्फ़ एक नज़रिया हैं, सम्पूर्ण सत्य नहीं, उसी पल मन का विस्तार आरम्भ हो जाता है। यही विस्तृत दृष्टि अंततः गहरे बोध और मुक्ति के गहरे एहसास की ओर ले जाती है।

कूपु भरिओ जैसे दादिरा कछु देसु बिदेसु न बूझ ॥
जैसे गहरे कुएँ में फँसा मेंढक घर और उससे बाहर की दुनिया को समझ नहीं पाता, वैसे ही सीमित सोच में बँधी चेतना व्यापक संदर्भ को नहीं जान पाती। यह ऐसी स्थिति को दर्शाता है जो आदतन परिवेश से सीमित है और अपने तात्कालिक अनुभव से परे व्यापक संदर्भ को समझने में असमर्थ है।

ऐसे मेरा मनु बिखिआ बिमोहिआ कछु आरा पारु न सूझ ॥१॥
इसी तरह, इंद्रियों के भटकाव से मोहित मन पास और दूर की किसी भी चीज़ को समझने में असमर्थ होता है। यह दर्शाता है कि हमारी अनुकूलित मानसिक प्रवृत्तियाँ विवेक को धूमिल कर देती हैं जिससे वास्तविकता और भ्रम के बारे में जागरूकता कम हो जाती है। (१)

सगल भवन के नाइका इकु छिनु दरसु दिखाइ जी ॥१॥ रहाउ ॥
हे सर्वव्यापी सत्ता, सभी लोकों को प्रकट करने वाले, पल की स्पष्टता प्रदान करें, यह दृष्टिकोण में बदलाव को प्रोत्साहित करता है। यह दर्शाता है कि संक्षिप्त चिंतन भी बिखरी हुई चेतना को सार्वभौमिक अंतर्संबंध की ओर पुनर्निर्देशित कर सकता है।

मलिन भई मति माधवा तेरी गति लखी न जाइ ॥
हे प्रिय चेतना, जब बुद्धि अशुद्धियों से घिर जाती है वह अपने वास्तविक स्वरूप को नहीं समझ पाती। इसका तात्पर्य है कि द्वैत से दूषित मन सर्वव्यापी चेतना के सार को नहीं समझ सकता।

करहु क्रिपा भ्रमु चूकई मै सुमति देहु समझाइ ॥२॥
शालीनता को अपनाएँ और भ्रम को दूर होने दें। ऐसा करने से, मैं नेक इरादे पैदा करता हूँ और अपनी समझ को गहरा करता हूँ। यह प्रक्रिया मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रकट करती है जो सावधानीपूर्वक किये गए आत्म-चिंतन से उत्पन्न होती है। (२)

जोगीसर पावहि नही तुअ गुण कथनु अपार ॥
बड़े-बड़े योगी, तपस्या और त्याग के स्वामी होने के बावजूद, वह सर्वव्यापी वास्तविकता के असीम गुणों को समझ या व्यक्त नहीं कर सकते। यह वास्तविकता इस विश्वास को चुनौती देती है कि आध्यात्मिक उपलब्धि केवल अनुशासन, बुद्धि, त्याग, तप या सामाजिक स्थिति पर निर्भर करती है।

प्रेम भगति कै कारणै कहु रविदास चमार ॥३॥१॥

रविदास जो कि पिछड़ी जाती, चमार से हैं कहते कि उनको सार्वभौमिक प्रेम के प्रति समर्पित कार्यों से पाया जा सकता है। यह पंक्ति बताती है कि सत्य की अनुभूति पद, जाति या योग्यता पर नहीं बल्कि विनम्रता, प्रेम और एकता पर आधारित है। (३)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास कहते हैं कि अस्तित्व की सच्ची समझ अनुष्ठानों, तपस्या या त्याग से आगे है। उनका मानना है कि स्पष्टता जीवन को आंतरिक कोमलता के साथ अपनाने से आती है जो भ्रम के कारणों को स्वाभाविक रूप से सुलझने देती है। सार्वभौमिकता को अपनाने और आत्मसात करने की यह इच्छा धारणाओं को व्यापक बना सकती है, यह ख़ुलासा करते हुए कि जो दूर प्रतीत हो रहा था, वह सदा भीतर ही उपस्थित था। यह बदलाव दिखाता है कि चिंतन का एक छोटा सा पल भी हमारे बिखराव के नज़रिए को बदलकर सार्वभौमिक जुड़ाव की समझ में बदल सकता है जो पद, जाति या योग्यता पर निर्भर रहने के बजाय विनम्रता और एकता को जागरूकता के मार्ग के रूप में देखता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com